वेदों में भारतीय संगीत

***डॉ0 लक्ष्मी धस्माना**

वेद मानव वंश का प्राचीनतम अतुलनीय ग्रन्थ है। वेद से ज्ञान व कर्म दोनों के सम्बन्ध की शिक्षा प्राप्त होती है। वेदों की श्रुति परम्परा उद्‌गान द्वारा ही जीवित है। ज्ञान का मार्ग अत्यधिक कठिन है। संगीत के माध्यम से वह गुरू द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। इस शोध पत्र का उद्‌देश्य वेद मंत्रों को भारतीय संगीत की स्वर लहरी की माला में पिरोकर एक सूत्र में बाँधना व सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड को गुन्जायमान कर वेदों के गूढ़ रहस्य को ज्ञान की ज्योति से मानव हदय को प्रकाषमान कर आत्मिक सुख की प्राप्ति कराना है।

वेद– वेद चिन्मयरूप जिसका स्वरूप नित्य अविनाशी गुणों से परिपूर्ण है। ज्ञान के भण्डार में लौकिक तथा अलौकिक सभी विषयों का समन्वय रहता है। वेद का सम्बन्ध केवल मन्त्र संहिता से नहीं, वरन् इसके अर्न्तगत ब्राह्मण आरणयक तथा उपनिषद वाङ्मय का समावेश है। वेद मानव वंश का प्रचीनतम अतुलनीय एकमात्र ग्रन्थ है।[1] वेद से ज्ञान और कर्म दोनों के सम्बन्ध की शिक्षा प्राप्त होती है। दोनों एक दूसरे के पूरख है। बिना कर्म के ज्ञान नहीं और बिना ज्ञान के कर्म (भक्ति) नहीं। प्रत्येक चेतना अवस्था में यह दोनों (ज्ञान) विद्यमान होते हैं। किन्तु दोनों में विभिन्नतायें भी हैं। उपनिषदों में कर्म को अत्यधिक महत्व दिया है किन्तु ज्ञान का स्थान (पद) नहीं दिया गया है। ज्ञान के फल को कर्मफल की तुलना में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह भी ज्ञात कराया है कि कर्मफल में स्थिरता नहीं होती है। कर्म का फल अस्थायी होता है।[2] कर्म के अन्तर्गत धार्मिक आचरण कायिक वाचिक और मानसिक पवित्रता जिनके माध्यम से वाह्य शुद्धि तथा सूक्ष्म उपासनायें की जाती हैं। ज्ञान की ज्योति तभी प्रज्जवलित होती है, जब अन्तःकरण सर्वथा निर्मल हो। मन्त्रों में वह निहित शक्ति होती है, जो अचेतन अवस्था में भी अपना कार्य करती है, जो सूक्ष्म रूप में है। अभ्यास के द्वारा उस शक्ति को जाग्रत करना पड़ता है। ब्रह्मा ने चारों मुखों से चार वेदों की उत्पत्ति की है–

1–ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। वेद ईश्वर के निःश्वास रूप है। इसलिये उसे अपौरूषेय कहा गया है।''[3] अपने कार्य में असफल व्यक्ति ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मैं समुद्र की गहराई को जानना चाहता हूँ। गहराईयों में जो रत्न हैं उन तक पहुँचना चाहता हूँ, लेकिन मुझे तैरना नहीं आता है। आपके मार्गदर्शन से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जायेगा। ज्ञान की ज्योति का साक्षात्कार करने में आपकी सहायता अनिवार्य है। ऋग्वेद के दूसरे मन्त्र में भी अभय ज्योति के लिये साधक ने प्रार्थना की है। वैदिक मन्त्रों में निहित परम तत्व को जानने के लिये जिज्ञासु ने आत्म समर्पण किया, क्योंकि बिना आत्म समर्पण के ज्ञान की ज्योति प्रज्जवलित नहीं हो सकती। हे वेद पति, सबका आत्म सत चित्, आनन्द स्वरूप, अनन्त, अज, न्यायकारी, निर्मल, सदा पवित्र, दयालु, सब सामर्थ्य वाला हमारा ईष्ट देव है वह हमको सहाय नित्य देवे। जिससे महा कठिन काम भी हम लोग सहज से करने को समर्थ हों। हे कृपा'–निधे! यह काम हमारा आप ही सिद्ध करने वाले हो, हम पूर्ण विश्वास व आशा करते हैं कि आप अवश्य हमारी कामना सिद्ध करेंगें।[4]

महर्षि दयानन्द सरस्वती – मानव जीवन का लक्ष्य आत्मा की उन्नति व आत्मलाभ है। उपनिषदकारों के मतानुसार आत्मा का निर्माण पंचकोशों से माना गया है–अन्नमयकोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश तथा आन्नदमय कोश। परमतत्व का साक्षात्कार आनन्दमय कोश में होने के कारण इस कोश को सर्वोच्च माना गया है।[5]

भगवत्गीता में कहा गया है कि अर्जुन कृष्ण के मित्र व सारथी थे किन्तु ज्ञान के रहस्य को नहीं जान पाये। जब सगे सम्बन्धियों से अन्याय के विरूद्ध युद्ध करने के लिये कृष्ण ने अर्जुन को प्रेरित किया तब अर्जुन दुखः का अनुभव कर युद्ध से विमुख होने लगे, तब श्रीकृष्ण ने अपने ईश्वरत्व रूप को दिखाया। ईश्वर की पूर्ण शरणागति जब होती है तब शरणागत को भगवान अपना अन्तरमय खोल करके दिखाते हैं। अन्तरङगता के बिना प्रेम नहीं होता और प्रेम के बिना वास्तविक ज्ञान

*संगीत विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल।

प्राप्त नहीं होता। कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया आत्मा अजर और अमर है। शरीर नश्वर हैं। धर्म के लिये किया गया युद्ध पाप से युक्त होता है।

''सुख दुःखे समे कृत्वा लाभालाभो जयाजयो
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि''[6]

सुख, दुख, लाभ–हानि, जय–पराजय सभी को समान समझकर युद्ध के लिये उठो। इस प्रकार के युद्ध करने से तू पाप को प्राप्त नहीं होगा। हे प्रिय अर्जुन मेरे प्रिय वचनों को सुन अन्याय करने से अन्याय को सहन करने वाला पाप का भागी होता है। इसलिये धर्म के लिये युद्ध कर। ''ज्ञान और कर्म के सम्बन्ध में ईश उपनिषद के तीन मंत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण है। ● जो लोग कर्म भी उपासना करते हैं वे गहन अन्धकार में प्रवेश करते हैं। जो लोग विद्या की उपासना करते है वे गहन अन्धकार में जाते हैं। ज्ञान का फल एक है व कर्म का फल उससे भिन्न है। जो व्यक्ति ज्ञान और कर्म को एक साथ जानता है वह ज्ञान भी सहायता से भवसागर से पार हो जाता है और कर्म की सहायता से अमृत्व को प्राप्त हो जाता है।''[7] वेदों के द्वारा ही सम्पूर्ण संस्कृतियों के बीज प्राप्त होते हैं। वेद, पद, गद्य और गीति में रचे गये हैं। ऋग्वेद पदात्मक हैं यजुर्वेद का अत्यधिक अंश गद्य हैं व सामवेद गीति में हैं। अर्थववेद में मारन उच्चाटन आदि का वर्णन है।[8]

''संगीत शब्द की व्युत्ति सम्. गी. त। 'सम' उपसर्ग सम्पूर्णता का बोधक है। गीत तभी प्रभावोत्पादक होता है, जब उसके साथ उसके अन्य अंग वादन व नृत्य भी समावेश होता है[9] गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं संगीतमुच्यते। ● (संगीत रत्नाकर) ये तीनों कलायें एक दूसरे के पूरख है। स्वतन्त्र होते हुए भी गान के अधीन वादन तथा वादन के अधीन नृत्य हैं। गायक अपने हृदय की भावनाओं को गायन के माध्यम से वादक वादन द्वारा और नृत्यकार नृत्य द्वारा प्रदर्शित करता है। अतः ललित कलाओं में संगीत कला को सर्वोच्च श्रेणी में रखा गया है।[10]

सत् चित् आनन्द स्वरूप ब्रह्मा ने अपनी त्रिगुणात्मक प्रकृति के द्वारा इस संसार की रचना की। ब्रह्म के आनन्द स्वरूप तत्व से संगीत की उत्पत्ति हुई। आनन्दमय तत्व का साक्षात रूप अधिष्ठाती देवी सरस्वती संगीत की देवी मानी जाती है। प्राचीन परम्परा के अनुसार ब्रह्मा द्वारा भगवान शंकर ने संगीत को आनन्दस्वरूप व सुचारू पूर्वक संसार को प्रदान किया। नारद ने इस संगीत को विद्या व कला की देवी सरस्वती को देकर उसे स्वर्ग और धरा पर अवतरित किया।[11]

संगीत की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों के अनेक मत हैं। वास्तविकता यह है कि संगीत का विकास स्वयं मानव के विकास से सम्बद्ध है। प्राचीन महर्षि मन्त्रों के दष्टा कहे गये हैं। उन्होंने प्रकृति की बिखरी हुई विभूतियों में दैव्य शक्ति की कल्पना और अपनी उस कल्पना को जनमानस तक पहुँचाने के लिये इसे अपने आचरण में आत्मसात कर लिखित रूप में सुरक्षित रखने का उत्तरदायित्व लिया है।[12] वैदिक काल में संगीत कला को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है। इससे साधक इहलोक व परलोक प्राप्ति की इच्छओं की पूर्ति स्वतः हो जाती थी। संगीत प्रेमी किसी राजा व अन्य किसी भी शासक के अधीन नहीं होता था। ''ललित कलाओं में संगीत का सर्वोच्च व प्रमुख स्थान है। वर्तमान समय में भारतीय संगीत में वैदिक तथा तांत्रिक दोनों परम्पराओं का समन्वय मिलता हैं, भावों का स्फुरण गीत के रूप में होने पर ही वाद्य एवं नष्त्य की कल्पना साकार होती है।[13] संगीत की प्रचीनतम संज्ञा गान्र्धव है। वेदों की भाँति सनातन गान्र्धव को माना गया है। संगीत का मधुर कलरव जब कानों को सुख का अनुभव कराता है तब हृदय के अन्तरन की चेतना प्रबुद्ध हो जाती है व अन्तःकरण आलौकिक आनन्द एवं दिव्यानुभूति का अनुभव करता है जो भौतिक सुख से अत्यधिक श्रेष्ठ व सन्तोषप्रद है। ऋग्वेद की ऋचाओं का गान देवता की प्रसन्नता के लिये आवश्यक ही नहीं अनिवार्य माना गया है। भारतीय दर्षष्टिकोण के शब्दों में– संगीत भ्रान्त मस्तिष्क के लिये केवल मनोविनोद का साधन नहीं, वरन् ईश्वर के अनुसंधान से परम मंगल का विद्यायक है।[14] वैदिक साहित्य में भी आर्यो के संगीत–प्रेम की झाँकी दर्षष्टिगोचर है। संगीत कई लोगों जीविकापार्जन का साधन था। यर्जुवेद में बास पर नाचने वाला वंशनिर्तिन का वर्णन है। अधिकांश स्त्रियों की यही इच्छा रहती थी कि उन्हें संगीत से प्रेम करने वाला पति मिले। वाद्यों का प्रयोग युद्ध काल में सैनिकों को उत्साहित एवं उत्तेजित करने के लिये किया जाता था। वेदों में अनेक प्रकार के

वाद्यों का उल्लेख है। जैसे– दुंदुभि, शंख, कर्करि और गर्गर प्रमुख है।[15]

संगीत का दूसरा नाम गांधर्व विद्या है। भारतीय विचारधारा के मतानुसार संगीत का मूल सामवेद है। इसके मंत्र यज्ञों में देवताओं की स्तुति करते हुए गाये जाते थे। गेय मन्त्रों का विशेष नाम ''सामन'' है। सामवेद संहिता का संकलन उद्गाता नाम ऋत्विक के लिये प्रयोग किया हैं उद्गाता का तात्पर्य है कि उच्च स्वर से गाने वाला व्यक्ति। ''गीतिषु सामाख्या'' गीति ही साम है और गीति प्राण है स्वर। सामवेद की ऋचाओं को संगीत में परिणत करने के लिये कुछ पद जोड़े जाते थे जिन्हें स्तोभ कहा जाता है।[16]

''स्तुति करते हम वेद ज्ञान की,
जो माता है प्रेरक–पालक पवन करती मनुज मात्र को
आयु, बल, सन्तति, पशुकीर्ति, धन, मेघा विद्या का दान।
सबकुछ देकर हमें दिया है, मोक्ष मार्ग का पावन ज्ञान।''

देवताओं को एक विशिष्ट पद्वति द्वारा गा–गा कर यज्ञ के समय प्रसन्न किया जाता है उसे सामवेद कहते हैं। सामवेद का मुख्य विषय उपासना है। इस वेद के मन्त्रों द्वारा ईश्वर का गायन किया जाता था। ''साम का वास्तविक अर्थ है गान, सुन्दर सुखकर वचन। संगीत विद्या हृदय के तार को झंकृत करने वाला सुखमय एवं आनन्दमय माना गया है। सामवेद में स्वरों का महत्वपूर्ण स्थान है सामगान में सात स्वरों षड्ज, ऋषभ, गन्धार, माध्यम, पंचम, धैवत और निषाद का प्रयोग उदात्त, अनुदात्त और स्वरित इन तीनों स्वरों में होता था।[19] वैदिक संगीत का शास्त्रीय स्वरूप है। साम है और वह वेद–वाड्मय का एक अन्यतम् और महत्वपूर्ण भाग है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है– वेदानां सामवेदोडस्मि। सामवेद की गान–संहिता में ग्रामेगये गान तथा आरण्यगेय गान है सभी एक–एक ऋचा पर किये जाने वाले गान हैं। [20] सामवेद का मुख्य लक्ष्य ईश्वरोपासना और मोक्ष प्राप्ति था। मार्गी संगीत का भारतीय संगीत शास्त्र में विशिष्ट पारिभाषिक अर्थ है। इसका प्राचीन नाम गार्न्धव व किन्नर है। ये जातियाँ अपनी संगीताराधना के लिये विख्यात रही हैं। संगीत की उत्पत्ति जगत के कल्याण के लिये की गई।

''संगीत है शक्ति ईश्वर की हर स्वर में बसे है राम
रागी जो सुनाये रागिनी, रोगी को मिले आराम।[21]

वेद मन्त्रों का गायन गंधर्वो द्वारा महत्वपूर्ण यज्ञों के अवसर पर किया जाता था। सामवेद की रचनायें अवसरों के लिये की गई थी। सामवेद में ऋग्वेद से लिये गये ईश्वर स्तुति के मन्त्रों के अतिरिक्त काफी बड़ी संख्या में वेद मन्त्र दिये गये हैं, उदात्त, अनुदात्त स्वरित तीन स्वरों द्वारा उच्चारित कर मधुर ध्वनि से वातावरण गुंजायमान हो जाता था। वेदमन्त्रों में संगीत द्वारा स्वरों के उतार–चढ़ाव, ठहराव आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता था। संगीत जहॉ एक ओर मानव के मनोरंजन का साधन है, वहीं दूसरी ओर मानव के आत्म साक्षात्कार द्वारा ईश्वर तक पहुँचने का श्रेष्ठ व श्रेयकर मार्ग है।[22] सामगान के पुष्ट प्रमाण यह ज्ञात कराते हैं कि पूर्वजों ने संगीत की इस अनन्य क्षमता को वैदिक काल में ही परख लिया था। भारतीय संगीत की लोकरंजक, भवभंजक और अन्य उपयोगी क्षमतायें विविध प्रकार की है। अबोध शिशु को सुनाई जाने वाली लोरी से लेकर पर्वों, उत्सवों और मांगलिक कार्यो इत्यादि में संगीत की अविरल धारा हम सभी को सर्वत्र समान रूप से रससिक्त करती रहती है।[23]

- संगीत की गंगा, यमुना तथा सरस्वती का उद्गम स्थान सामवेद माना गया है। वैदिक काल से ही सप्तस्वरों में निबद्ध सामगान यज्ञों में उपासना गीत के रूप में गाये जाते थे तथा सामाजिक उत्सवों के अवसरों पर गायी जाने वाली देवताओं और राजाओं की प्रशस्ति गाथाएँ मानव मन को प्रभावित व झंकृत करती रही है।[24]

इस प्रकार वैदिक मन्त्रों को संगीत के मधुर स्वरों की माला में पिरोकर वेद मन्त्रों में चार चाँद लगाती है। वेदों में संगीत की स्वर लहरी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को गुन्जायमान कर सम्पूर्ण वातावरण को प्रफुल्लित कर मानव हृदय को झंकृत करती है व आत्मा का परमात्मा से मिलन कराती है।

संदर्भ

1 खान तजम्मुल संगीतज्ञ, संगीत युगे–युगे, प्रथम संस्करण 1000, 1988, पृ0सं0 11 शकीला बानों 9 गाजी मण्डी पो0ओ0 चौक लखनऊ–226003

2 चन्द्र दीवान, दर्शन संग्रह, संस्करण द्वितीय आवृत्ति 1968, पृ0सं0 28 हिन्दी समिति सूचना विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ

3 जौहरी सीमा, संगीतायन, प्रथम संस्करण 2003, पृ0सं0 192, राधापति केशन्स 437814 ठ, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11000

4 स्वामीकृत स्व0 श्री तुलसीराम, सामवेद (हिन्दी भाष्य), तृतीय संस्करण आर्य संवत् 1972949090, पृ0सं0 1, प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली–2

5 श्रीवास्तव हरीशचन्द्र, संगीत निबन्ध संग्रह, सप्तम संस्करण 1995, पृ0सं0 49, संगीत सदन प्रकाशन 134/88 साउथ मलाका, इलाहाबाद दूरभाष 605973

6 शिशु मन्दिर, उ0प्र0 सत्यमेव मृगेन्द्रता, पृ0सं0 1

7 चन्द्र दीवान, दर्शन संग्रह, संस्करण द्वितीय आवृत्ति 1968, पृ0सं0 29, हिन्दी समिति सूचना विभाग उत्तर प्रदेश, लखनऊ

8 खान तजम्मुल, संगीत युगे–युगे प्रथम संस्करण 1988, पृ0सं0 10, शकीला बानो 9 गाजी मन्डी पो0ओ0 चौक, लखनऊ–226003

9 जायसवाल डॉ0 राधेश्याम, भारतीय सुशिर वाद्यों का इतिहास, संस्करण 1983, पृ0सं0 1, प्रकाशक वाराणसेय संस्कृत संस्थानम सी 27/170 ए, मातृ–स्मृति मन्दिर, जगतबाज वाराणसी

10 राम वदन राम, संगीत पुष्पांजली भाग 1, प्रथम संस्करण 1984, पृ0 सं0 14, संगीत साहित्य प्रकाशन 315 शाहगंन इलाहाबाद–3

11 जौहरी सीमा, संगीतायन, प्रथम संस्करण 2003, पृ0सं0 1, राधा पब्लिकेशन्स 4378/4ठ अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 110002

12 खान तजम्मुल, संगीतज्ञ, संगीत युगे–युगे, प्रथम संस्करण 1000, 1988, पृ0सं0–10, शकीला बानो 9 गाजी मन्डी पो0ओ0 चौक लखनऊ 226003

13 गर्ग नारायण प्रधान संपादक लक्ष्मी, संगीत नवम्बर 1977, संस्करण वर्ष 43, अंक 17 नवम्बर 1977 प0सं0 11, संगीत कार्यालय हाथरस उ0प्र0

14 श्रीवास्तव हरिश्चन्द्र, संगीत निबन्ध संग्रह, प0सं0 52, संगीत सदन प्रकाशन 134/88, साउथ मलाका इलाहाबाद–1

15 पाण्डेय डॉ0 श्याम लाल, वेदकालीन राज्यव्यवस्था, प्रथम संस्करण 1971, पृ0सं0 204, हिन्दी समिति सूचना विभाग उ0प्र0 लखनऊ

16 गर्ग नारायण संकलक–लक्ष्मी, निबन्ध संगीत, प्रथम संस्करण मई 1978, पृ0सं0 126, संगीत कार्यालय हाथरस (उ0प्र0)

17 स्वामीकृत स्व0 श्री प0 तुलसीदाम, समवेद हिन्दी भाष्य संस्करण आर्य सम्वत् 1972 949090, पृ0सं0 2, प्रकाशक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 दयानन्द भवन रामलीला मैदान नई दिल्ली–2

18 खान तजम्मुल, संगीतज्ञ, संगीत युगे–युगे, प्रथम संस्करण 1000,1988, पृ0सं0 19, शकीला बानो 9 गाजी मन्डी पो0ओ0 चौक लखनऊ 226003

19 द्विवेदी देव कपिल, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, तृतीय संस्करण सन् 1982,साहित्य संस्थान मोतीलाल नेहरू रोड इलाहाबाद

20 हाथरसी काका, संस्थापक, संगीत शोध लेख अंक, जनवरी, फरवरी 1995, पृ0सं0 20, प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस 204101 उ0 प्र0

21 खान तजम्मुल, संगीतज्ञ, संगीत युगे युगे, प्रथम संस्करण 1988, शकीला बानो 9 गाजी मन्डी पो0ओ0 चौक लखनऊ 226003

22 जौहरी सीमा, संगीतायन, प्रथम संस्करण 2003, पृ0सं0 32, राधा पब्लिकेशन्स 4378/4ठ अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली 110002

23 गर्ग संस्थापक प्रभुलाल, मीरा संगीत अंक संस्करण जनवरी, फरवरी 1978, पृ0सं0 8, संगीत कार्यालय हाथरस (उ0 प्र0)

24 सिंह कीर्ति कात्या, लावण्य, संगीत संजीवनी, प्रथम संस्करण 2005, पृ0सं0 5, कनिष्ठ पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/5–21 अंसारी रोड, नई दिल्ली